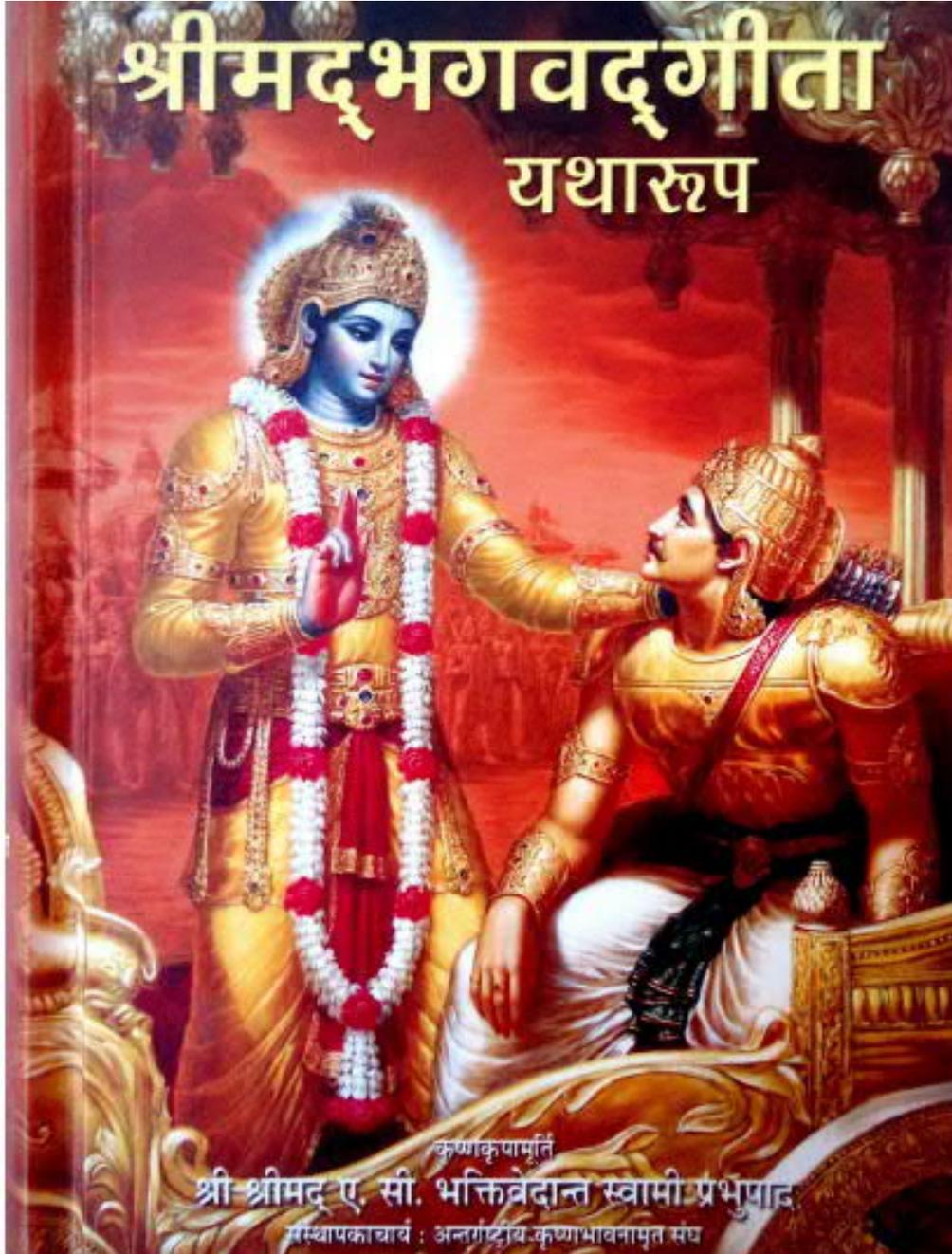


108 Important Gita Slokas

From

Bhagavad-Gita As It Is



With Hindi and English

Translation

INTRODUCTION

हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हैं।
हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे।

भगवत-गीता को गीतोपनिषद के नाम से भी जाना जाता है। यह वैदिक ज्ञान का सार है और वैदिक साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण उपनिषदों में से एक है। भगवद् गीता महाभारत की छठी पुस्तक का एक भाग है। भगवद्- गीता की रचना महर्षि व्यास द्वारा की गई है और लगभग पाँच हजार वर्ष पुरानी है।

भगवद् गीता नाम का अर्थ है "प्रभु का गीत"। गीता शब्द का अर्थ है गीत और भगवद् शब्द का अर्थ है भगवान, भगवद्-गीता प्राचीन भारत के आध्यात्मिक ज्ञान का शाश्वत संदेश है।

भगवद्-गीता के अनुसार जीवन का उद्देश्य भक्ति-योग या भक्ति सेवा का अभ्यास करके हमारे अस्तित्व को सभी भौतिक संदूषण से शुद्ध करना है और जीवन के अंत में घर वापस जाना है, गॉडहेड में वापस आना है, अर्थात् कृष्ण भगवान का निवास।

गीता के 700 श्लोक, 18 अध्यायों में व्यवस्थित हैं। यह लड़ाई शुरू होने से पहले भगवान कृष्ण और अर्जुन के बीच एक वार्तालाप है। कृष्ण सर्वोच्च आत्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं, अर्जुन व्यक्तिगत आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है, और लड़ाई मानव जीवन के नैतिक और नैतिक संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है।

भगवद् गीता के इस संक्षिप्त अवलोकन में, कृष्ण-कृपामूर्ति श्री श्री ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद, इस्कॉन के संस्थापक द्वारा उद्धृत प्रत्येक अध्याय के चुनिंदा श्लोक शामिल हैं। हालाँकि, आप केवल संपूर्णता में महाकाव्य को पढ़कर भगवद् गीता की पूर्ण शिक्षाओं, समृद्धि और गहराई का अनुभव कर सकते हैं।

hare krishna, hare krishna, krishna krishna hare hare.

Hare rama, hare rama, rama rama hare hare.

Bhagwat-gita is also known as Gitopanisad. It is essence of Vedic knowledge and one of the most important Upanisads in Vedic literature. The Bhagavad Gita forms a section of the sixth book of the Mahabharata. The Bhagavad- Gita is composed by Maharshi Vyasa and about five thousand years old.

The name Bhagavad Gita means "the song of the Lord". The word Gita means song and the word Bhagavad means God, The Bhagavad-Gita is the eternal message of spiritual wisdom from ancient India.

The purpose of life as per Bhagavad-Gita is to purify our Existence from all material contamination by practicing Bhakti-yoga or Devotional Service and at the end of life go back home, back to Godhead, i.e Lord Krishna's abode.

The 700 verses of the Gita, arranged in 18 chapters. This is a conversation between Lord Krishna and Arjuna before the battle begins. Krishna represents the supreme soul, Arjuna represents the individual soul, and the battle represents the ethical and moral struggles of human life.

This brief overview of the Bhagavad Gita, includes select shloka from each chapter frequently quoted by Krishna-kripamurthi Shri Shri A. C. Bhaktivedanta Swami Srila prabhupada, founder of ISKCON . However, you can only experience the full teachings, richness, and depth of the Bhagavad Gita by reading the epic in its entirety.

Table of Contents

SHLOKAS Nos.....

- Chapter-1, BG 1.1, 1.41,
Chapter-2, BG 2.7, 2.13, 2.20, 2.44, 2.62
Chapter-3, BG 3.9, 3.13, 3.27, 3.31,
Chapter-4, BG 4.1, 4.2, 4.5, 4.7, 4.8, 4.9, 4.11, 4.13, 4.18, 4.34, 4.40
Chapter-5, BG 5.06, 5.18, 5.22, 5.23, 5.29,
Chapter-6, BG 6.30, 6.35, 6.41, 6.47,
Chapter-7, BG 7.1, 7.3, 7.4, 7.5, 7.7, 7.8, 7.14, 7.15, 7.16, 7.19, 7.23, 7.28, 7.29,
Chapter-8, BG 8.5, 8.6, 8.15, 8.16, 8.17, 8.19,
Chapter-9, BG 9.2, 9.4, 9.10, 9.11, 9.23, 9.25, 9.26, 9.27, 9.29, 9.32, 9.34
Chapter-10, BG 10.8, 10.10, 10.39,
Chapter-11, BG 11.10, 11.11, 11.33, 11.54,
Chapter-12, BG 12.2, 12.5, 12.20,
Chapter-13, BG 13.8, 13.9, 13.22, 13.23, 13.33,
Chapter-14, BG 14.4, 14.5, 14.15, 14.26,
Chapter-15, BG 15.6, 15.7, 15.15,
Chapter-16, BG 16.1, 16.2, 16.3, 16.13, 16.14, 16.15, 16.21, 16.23,
Chapter-17, BG 17.8, 17.9, 17.10, 17.14,
Chapter-18, BG 18.40, 18.51, 18.52, 18.53, 18.54, 18.55, 18.61, 18.65, 18.66, 18.68, 18.69, 18.71, 18.78,

This book has selected 108 shlokas out of Total 700 shlokas in Gita book.

गुरु-परम्परा

एवं परम्पराप्राप्तम् इमं राजर्षयो विदुः (भगवद्गीता ४.२) | यह भगवद्गीता यथारूप इस गुरु-परम्परा द्वारा प्राप्त हुई है

1. कृष्ण

2. ब्रह्म 3. नारद 4. व्यास 5. माधव 6. पद्मनाभ 7. नरहरि 8. माधव 9. अक्षोब्य 10. जया तीर्थ 11. ज्ञानसिंधु 12. दयानिधि 13. विद्यानिधि 14. राजेंद्र 15. जयधर्म 16. पुरुषोत्तम 17. ब्रह्मन्य तीर्थ 18. व्यास तीर्थ 19. लक्ष्मीपति 20. माधवेंद्र पुरी 21. ईश्वर पुरी, (नित्यानंद, अद्वैत)

22. भगवान् चैतन्य

23. रूपा, (स्वरूपा, सनातन) 24. रघुनाथ, जीवा 25. कृष्णदासा 26. नरोत्तम 27. विश्वनाथ 28. (बलदेव) जगन्नाथ 29. भक्तिविनोद 30. गौरकिसोरा 31. भक्तिसिद्धान्त सरस्वती

32. कृष्ण-कृपामूर्ति श्री श्री ए। सी। भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद

THE DISCIPLIC SUCCESSION

"Evam parampara-praptam imam rajarsayo viduh (Bhagavad-gita 4.2).

This Bhagavad-gita As It Is is received through this disciplic succession:

1.Krsna

2. Brahma 3. Narada 4. Vyasa 5. Madhva 6. Padmanabha 7. Nrhari 8. Madhava 9. Aksobhya 10. Jaya Tirtha 11. Jnanasindhu 12. Dayanidhi 13. Vidyanidhi 14. ajendra 15. Jayadharm 16. Purusottama 17. Brahmanya Tirtha 18. Vyasa Tirtha 19. Laksmipati 20. Madhavendra Puri 21. Isvara Puri, (Nityananda, Advaita),

22. Lord Caitanya

23. Rupa, (Svarupa, Sanatana) 24. Raghunatha, Jiva 25. Krsnadasa 26. Narottama 27. Visvanatha 28. (Baladeva) Jagannatha 29. Bhaktivinoda 30. Gaurakisora 31. Bhaktisiddhanta Sarasvati

32. His Divine Grace A. C. Bhaktivedanta Swami Prabhupada"

CHAPTER ONE Observing the Armies on the Battlefield of Kurukṣetra

शक्तिशाली योद्धा अर्जुन युद्धाभिमुख विपक्षी सेनाओं में अपने निकट सम्बन्धियों, शिक्षकों तथा मित्रों को युद्ध में अपना-अपना जीवन उत्सर्ग करने के लिए उद्यत देखता है। वह शोक तथा करुणा से अभिभूत होकर अपनी शक्ति खो देता है, उसका मन मोहग्रस्त हो जाता है और वह युद्ध करने के अपने संकल्प को त्याग देता है।

As the opposing armies stand poised for battle, Arjuna, the mighty warrior, sees his intimate relatives, teachers and friends in both armies ready to fight and sacrifice their lives. Overcome by grief and pity, Arjuna fails in strength, his mind becomes bewildered, and he gives up his determination to fight.

BG 1.1,

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥ १ ॥

धृतराष्ट्र ने कहा -- हे संजय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा से एकत्र हुए मेरे तथा पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया ?

Dhṛtarāṣṭra said: O Sañjaya, after assembling in the place of pilgrimage at Kurukṣetra, what did my sons and the sons of Pāṇḍu do, being desirous to fight?

BG 1.41,

सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ।

पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥ ४१ ॥

अवांछित सन्तानों की वृद्धि से निश्चय ही परिवार के लिए तथा पारिवारिक परम्परा को विनष्ट करने वालों के लिए नारकीय जीवन उत्पन्न होता है। ऐसे पतित कुलों के पुरखे (पितर लोग) गिर जाते हैं क्योंकि उन्हें जल तथा पिण्ड दान देने की क्रियाएँ समाप्त हो जाती हैं।

When there is increase of unwanted population, a hellish situation is created both for the family and for those who destroy the family tradition. In such corrupt families, there is no offering of oblations of food and water to the ancestors.

CHAPTER TWO Contents of the Gītā Summarized

अर्जुन शिष्य-रूप में कृष्ण की शरण ग्रहण करता है और कृष्ण उससे नश्वर भौतिक शरीर तथा नित्य आत्मा के मूलभूत अन्तर की व्याख्या करते हुए अपना आदेश प्रारम्भ करते हैं। भगवान् उसे देहान्तरण की प्रक्रिया, परमेश्वर की निष्काम सेवा तथा स्वरूपसिद्ध व्यक्ति के गुणों से अवगत कराते हैं।

Arjuna submits to Lord Krishna as His disciple, and Krishna begins His teachings to Arjuna by explaining the fundamental distinction between the temporary material body and the eternal spiritual soul. The Lord explains the process of transmigration, the nature of selfless service to the Supreme and the characteristics of a self-realized person.

BG 2.7,

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः

पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः ।

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे

शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ ७ ॥

अब मैं अपनी कृपण-दुर्बलता के कारण अपना कर्तव्य भूल गया हूँ और सारा धैर्य खो चूका हूँ। ऐसी अवस्था में मैं आपसे पूछ रहा हूँ कि जो मेरे लिए श्रेयस्कर हो उसे निश्चित रूप से बताएँ। अब मैं आपका शिष्य हूँ और शरणागत हूँ। कृप्या मुझे उपदेश दें।

Now I am confused about my duty and have lost all composure because of weakness. In this condition I am asking You to tell me clearly what is best for me. Now I am Your disciple, and a soul surrendered unto You. Please instruct me.

BG 2.13,

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।

तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ १३ ॥

जिस प्रकार शरीरधारी आत्मा इस (वर्तमान) शरीर में बाल्यावस्था से तरुणावस्था में और फिर वृद्धावस्था में निरन्तर अग्रसर होता रहता है, उसी प्रकार मृत्यु होने पर आत्मा दूसरे शरीर में चला जाता है। धीर व्यक्ति ऐसे परिवर्तन से मोह को प्राप्त नहीं होता।

As the embodied soul continually passes, in this body, from boyhood to youth to old age, the soul similarly passes into another body at death. The self-realized soul is not bewildered by such a change.

BG 2.20,

न जायते म्रियते वा कदाचिन्

नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥

आत्मा के लिए किसी भी काल में न तो जन्म है न मृत्यु । वह न तो कभी जन्मा है, न जन्म लेता है और न जन्म लेगा । वह अजन्मा, नित्य, शाश्वत तथा पुरातन है । शरीर के मारे जाने पर वह मारा नहीं जाता

For the soul there is never birth nor death. Nor, having once been, does he ever cease to be. He is unborn, eternal, ever-existing, undying and primeval. He is not slain when the body is slain.

BG 2.44,

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ ४४ ॥

जो लोग इन्द्रियभोग तथा भौतिक ऐश्वर्य के प्रति अत्यधिक आसक्त होने से ऐसी वस्तुओं से मोहग्रस्त हो जाते हैं, उनके मनों में भगवान् के प्रति भक्ति का दृढ़ निश्चय नहीं होता ।

In the minds of those who are too attached to sense enjoyment and material opulence, and who are bewildered by such things, the resolute determination of devotional service to the Supreme Lord does not take place.

BG 2.62,

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ ६२ ॥

इन्द्रियाविषयों का चिन्तन करते हुए मनुष्य की उनमें आसक्ति उत्पन्न हो जाती है और ऐसी आसक्ति से काम उत्पन्न होता है और फिर काम से क्रोध प्रकट होता है ।

While contemplating the objects of the senses, a person develops attachment for them, and from such attachment lust develops, and from lust anger arises.

अध्याय तीन

कर्मयोग

CHAPTER THREE Karma-yoga

इस भौतिक जगत में हर व्यक्ति को किसी न किसी प्रकार के कर्म में प्रवृत्त होना पड़ता है । किन्तु ये ही कर्म उसे इस जगत से बाँधते या मुक्त कराते हैं । निष्काम भाव से परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए कर्म करने से मनुष्य कर्म करने से मनुष्य कर्म के नियम से छूट सकता है और आत्मा तथा परमेश्वर विषयक दिव्य ज्ञान प्राप्त कर सकता है ।

Everyone must engage in some sort of activity in this material world. But actions can either bind one to this world or liberate one from it. By acting for the pleasure of the Supreme, without selfish motives, one can be liberated from the law of karma (action and reaction) and attain transcendental knowledge of the self and the Supreme.

BG 3.9,

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः ।

तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥ ९ ॥

श्रीविष्णु के लिए यज्ञ रूप में कर्म करना चाहिए, अन्यथा कर्म के द्वारा इस भौतिक जगत् में बन्धन उत्पन्न होता है। अतः हे कुन्तीपुत्र! उनकी प्रसन्नता के लिए अपने नियत कर्म करो। इस तरह तुम बन्धन से सदा मुक्त रहोगे।

Work done as a sacrifice for Viṣṇu has to be performed, otherwise work binds one to this material world. Therefore, O son of Kuntī, perform your prescribed duties for His satisfaction, and in that way you will always remain unattached and free from bondage.

BG 3.13,

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः

भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥ १३ ॥

भगवान् के भक्त सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाते हैं, क्योंकि वे यज्ञ में अर्पित किये भोजन (प्रसाद) को ही खाते हैं। अन्य लोग, जो अपनी इन्द्रियसुख के लिए भोजन बनाते हैं, वे निश्चित रूप से पाप खाते हैं।

The devotees of the Lord are released from all kinds of sins because they eat food which is offered first for sacrifice. Others, who prepare food for personal sense enjoyment, verily eat only sin.

BG 3.27,

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।

अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ २७ ॥

जीवात्मा अहंकार के प्रभाव से मोहग्रस्त होकर अपने आपको समस्त कर्मों का कर्ता मान बैठता है, जब कि वास्तव में वे प्रकृति के तीनों गुणों द्वारा सम्पन्न किये जाते हैं।

The bewildered spirit soul, under the influence of the three modes of material nature, thinks himself to be the doer of activities, which are in actuality carried out by nature.

BG 3.31

ये ते मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः ।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥ ३१ ॥

जो व्यक्ति मेरे आदेशों के अनुसार अपना कर्तव्य करते रहते हैं और ईर्ष्यारहित होकर इस उपदेश का श्रद्धापूर्वक पालन करते हैं, वे सकाम कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाते हैं ।

One who executes his duties according to My injunctions and who follows this teaching faithfully, without envy, becomes free from the bondage of fruitive actions.

अध्याय चार

दिव्य ज्ञान

CHAPTER FOUR **Transcendental Knowledge**

आत्मा, ईश्वर तथा इन दोनों से सम्बन्धित दिव्य ज्ञान शुद्ध करने, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है । ऐसा ज्ञान कर्मयोग का फल है । भगवान् गीता के प्राचीन इतिहास, इस भौतिक जगत में बारम्बार अपने अवतरण की महत्ता तथा गुरु के पास जाने की आवश्यकता का उपदेश देते हैं ।

Transcendental knowledge-the spiritual knowledge of the soul, of God, and their relationship-is both purifying and liberating. Such knowledge is the fruit of selfless devotional action (karma-yoga). The Lord explains the remote history of the Gita, the purpose and significance of His periodic descents to the material world, and the necessity of approaching a guru, a realized teacher.

BG 4.1,

श्री भगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ १ ॥

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा – मैंने इस अमर योगविद्या का उपदेश सूर्यदेव विवस्वान् को दिया और विवस्वान् ने मनुष्यों के पिता मनु को उपदेश दिया और मनु ने इसका उपदेश इक्ष्वाकु को दिया ।

The Blessed Lord said: I instructed this imperishable science of yoga to the sun-god, Vivasvān, and Vivasvān instructed it to Manu, the father of mankind, and Manu in turn instructed it to Ikṣvāku.

BG 4.2,

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः ।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप ॥ २ ॥

इस प्रकार यह परम विज्ञान गुरु-परम्परा द्वारा प्राप्त किया गया और राजर्षियों ने इसी विधि से इसे समझा। किन्तु कालक्रम में यह परम्परा छिन्न हो गई, अतः यह विज्ञान यथारूप में लुप्त हो गया लगता है।

This supreme science was thus received through the chain of disciplic succession, and the saintly kings understood it in that way. But in course of time the succession was broken, and therefore the science as it is appears to be lost.

BG 4.5,

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।

तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ॥ ५ ॥

श्रीभगवान् ने कहा – तुम्हारे तथा मेरे अनेकानेक जन्म हो चुके हैं। मुझे तो उन सबका स्मरण है, किन्तु हे परंतप! तुम्हें उनका स्मरण नहीं रह सकता है।

The Blessed Lord said: Many, many births both you and I have passed. I can remember all of them, but you cannot, O subduer of the enemy!

BG 4.7,

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ७ ॥

हे भरतवंशी! जब भी और जहाँ भी धर्म का पतन होता है और अधर्म की प्रधानता होने लगती है, तब तब मैं अवतार लेता हूँ।

Whenever and wherever there is a decline in religious practice, O descendant of Bharata, and a predominant rise of irreligion—at that time I descend Myself.

BG 4.8,

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ८ ॥

भक्तों का उद्धार करने, दुष्टों का विनाश करने तथा धर्म की फिर से स्थापना करने के लिए मैं हर युग में प्रकट होता हूँ।

In order to deliver the pious and to annihilate the miscreants, as well as to reestablish the principles of religion, I advent Myself millennium after millennium.

BG 4.9,

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥ ९ ॥

हे अर्जुन! जो मेरे अविर्भाव तथा कर्मों की दिव्य प्रकृति को जानता है, वह इस शरीर को छोड़ने पर इस भौतिक संसार में पुनः जन्म नहीं लेता, अपितु मेरे सनातन धाम को प्राप्त होता है ।

One who knows the transcendental nature of My appearance and activities does not, upon leaving the body, take his birth again in this material world, but attains My eternal abode, O Arjuna.

BG 4.11,

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ ११ ॥

जिस भाव से सारे लोग मेरी शरण ग्रहण करते हैं, उसी के अनुरूप मैं उन्हें फल देता हूँ। हे पार्थ! प्रत्येक व्यक्ति सभी प्रकार से मेरे पथ का अनुगमन करता है ।

All of them—as they surrender unto Me—I reward accordingly. Everyone follows My path in all respects, O son of Pṛthā.

BG 4.13,

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥

प्रकृति के तीनों गुणों और उनसे सम्बद्ध कर्म के अनुसार मेरे द्वारा मानव समाज के चार विभाग रचे गये यद्यपि मैं इस व्यवस्था का स्रष्टा हूँ, किन्तु तुम यह जाना लो कि मैं इतने पर भी अव्यय अकर्ता हूँ ।

According to the three modes of material nature and the work ascribed to them, the four divisions of human society were created by Me. And, although I am the creator of this system, you should know that I am yet the non-doer, being unchangeable.

BG 4.18,

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥

जो मनुष्य कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म देखता है, वह सभी मनुष्यों में बुद्धिमान् है और सब प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त रहकर भी दिव्य स्थिति में रहता है ।

One who sees inaction in action, and action in inaction, is intelligent among men, and he is in the transcendental position, although engaged in all sorts of activities.

BG 4.34,

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥

तुम गुरु के पास जाकर सत्य को जानने का प्रयास करो । उनसे विनीत होकर जिज्ञासा करो और उनकी सेवा करो । स्वरूपसिद्ध व्यक्ति तुम्हें ज्ञान प्रदान कर सकते हैं, क्योंकि उन्होंने सत्य का दर्शन किया है ।

Just try to learn the truth by approaching a spiritual master. Inquire from him submissively and render service unto him. The self-realized soul can impart knowledge unto you because he has seen the truth.

BG 4.40,

अज्ञश्चाश्रद्धधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥ ४० ॥

किन्तु जो अज्ञानी तथा श्रद्धाविहीन व्यक्ति शास्त्रों में संदेह करते हैं, वे भगवद्भावनामृत नहीं प्राप्त करते, अपितु नीचे गिर जाते हैं । संशयात्मा के लिए न तो इस लोक में, न ही परलोक में कोई सुख है ।

But ignorant and faithless persons who doubt the revealed scriptures do not attain God consciousness. For the doubting soul there is happiness neither in this world nor in the next.

अध्याय पाँच

कर्मयोग-कृष्णभावनाभावित कर्म

CHAPTER FIVE Karma-yoga— Action in Kṛṣṇa Consciousness

ज्ञानी पुरुष दिव्य ज्ञान की अग्नि से शुद्ध होकर बाह्यतः सारे कर्म करता है, किन्तु अन्तर में उन कर्मों के फल का परित्याग करता हुआ शान्ति, विरक्ति, सहिष्णुता, आध्यात्मिक दृष्टि तथा आनन्द की प्राप्ति करता है ।

Outwardly performing all actions but inwardly renouncing their fruits, the wise man, purified by the fire of transcendental knowledge, attains peace, detachment, forbearance, spiritual vision and bliss.

BG 5.06,

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥ ६ ॥

भक्ति में लगे बिना केवल समस्त कर्मों का परित्याग करने से कोई सुखी नहीं बन सकता । परन्तु भक्ति में लगा हुआ विचारवान व्यक्ति शीघ्र ही परमेश्वर को प्राप्त कर लेता है ।

Unless one is engaged in the devotional service of the Lord, mere renunciation of activities cannot make one happy. The sages, purified by works of devotion, achieve the Supreme without delay.

BG 5.18,

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ १८ ॥

विनम्र साधुपुरुष अपने वास्तविक ज्ञान के कारण एक विद्वान् तथा विनीत ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता तथा चाण्डाल को समान दृष्टि (समभाव) से देखते हैं।

The humble sage, by virtue of true knowledge, sees with equal vision a learned and gentle brāhmaṇa, a cow, an elephant, a dog and a dog-eater [outcaste] .

BG 5.22,

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥ २२ ॥

बुद्धिमान् मनुष्य दुख के कारणों में भाग नहीं लेता जो कि भौतिक इन्द्रियों के संसर्ग से उत्पन्न होते हैं। हे कुन्तीपुत्र! ऐसे भोगों का आदि तथा अन्त होता है, अतः चतुर व्यक्ति उनमें आनन्द नहीं लेता।

An intelligent person does not take part in the sources of misery, which are due to contact with the material senses. O son of Kuntī, such pleasures have a beginning and an end, and so the wise man does not delight in them.

BG 5.23,

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधद्वयं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥ २३ ॥

यदि इस शरीर को त्यागने के पूर्व कोई मनुष्य इन्द्रियों के वेगों को सहन करने तथा इच्छा एवं क्रोध के वेग को रोकने में समर्थ होता है, तो वह इस संसार में सुखी रह सकता है।

Before giving up this present body, if one is able to tolerate the urges of the material senses and check the force of desire and anger, he is a yogī and is happy in this world.

BG 5.29,

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥ २९ ॥

मुझे समस्त यज्ञों तथा तपस्याओं का परम भोक्ता, समस्त लोकों तथा देवताओं का परमेश्वर एवं समस्त जीवों का उपकारी एवं हितैषी जानकर मेरे भावनामृत से पूर्ण पुरुष भौतिक दुखों से शान्ति लाभ-करता है ।

The sages, knowing Me as the ultimate purpose of all sacrifices and austerities, the Supreme Lord of all planets and demigods and the benefactor and well-wisher of all living entities, attain peace from the pangs of material miseries.

अध्याय छह

ध्यानयोग

CHAPTER SIX Sāṅkhya-yoga

अष्टांग योग मन तथा इन्द्रियों को नियन्त्रित करता है और ध्यान को परमात्मा पर केन्द्रित करता है । इस विधि की परिणति समाधि में होती है ।

Astanga-yoga, a mechanical meditative practice, controls the mind and the senses and focuses concentration on Paramatma (the Supersoul, the form of the Lord situated in the heart). This practice culminates in samadhi, full consciousness of the Supreme.

BG 6.30,

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥ ३० ॥

जो मुझे सर्वत्र देखता है और सब कुछ मुझमें देखता है उसके लिए न तो मैं कभी अदृश्य होता हूँ और न वह मेरे लिए अदृश्य होता है ।

For one who sees Me everywhere and sees everything in Me, I am never lost, nor is he ever lost to Me.

BG 6.35,

श्रीभगवानुवाच
असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ ३५ ॥

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा – हे महाबाहो कुन्तीपुत्र! निस्सन्देह चंचल मन को वश में करना अत्यन्त कठिन है; किन्तु उपयुक्त अभ्यास द्वारा तथा विरक्ति द्वारा ऐसा सम्भव है ।

The Blessed Lord said: O mighty-armed son of Kuntī, it is undoubtedly very difficult to curb the restless mind, but it is possible by constant practice and by detachment.

BG 6.41,

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ।
श्रुचीनां श्रीमतां ग्रेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥ ४१ ॥

असफल योगी पवित्रात्माओं के लोकों में अनेकानेक वर्षों तक भोग करने के बाद या तो सदाचारी पुरुषों के परिवार में या कि धनवानों के कुल में जन्म लेता है ।

The unsuccessful yogī, after many, many years of enjoyment on the planets of the pious living entities, is born into a family of righteous people, or into a family of rich aristocracy.

BG 6.47,

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥ ४७ ॥

और समस्त योगियों में से जो योगी अत्यन्त श्रद्धापूर्वक मेरे परायण है, अपने अन्तःकरण में मेरे विषय में सोचता है और मेरी दिव्य प्रेमाभक्ति करता है वह योग में मुझसे परम अन्तरंग रूप में युक्त रहता है और सबों में सर्वोच्च है । यही मेरा मत है ।

And of all yogīs, he who always abides in Me with great faith, worshipping Me in transcendental loving service, is most intimately united with Me in yoga and is the highest of all.

अध्याय सात

भगवद्ज्ञान

CHAPTER SEVEN Knowledge of the Absolute

भगवान् कृष्ण समस्त कारणों के कारण, परम सत्य हैं । महात्मागण भक्तिपूर्वक उनकी शरण ग्रहण करते हैं, किन्तु अपवित्र जन पूजा के अन्य विषयों की ओर अपने मन को मोड़ देते हैं ।

Lord Krishna is the Supreme Truth, the supreme cause and sustaining force of everything, both material and spiritual. Advanced souls surrender unto Him in devotion, whereas impious souls divert their minds to other objects of worship.

BG 7.1,

श्रीभगवानुवाच
मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥ १ ॥

श्रीभगवान् ने कहा – हे पृथापुत्र! अब सुनो कि तुम किस तरह मेरी भावना से पूर्ण होकर और मन को मुझमें आसक्त करके योगाभ्यास करते हुए मुझे पूर्णतया संशयरहित जान सकते हो।

Now hear, O son of Pr̥thā [Arjuna], how by practicing yoga in full consciousness of Me, with mind attached to Me, you can know Me in full, free from doubt.

BG 7.3,

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।

यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ ३ ॥

कई हजार मनुष्यों में से कोई एक सिद्धि के लिए प्रयत्नशील होता है और इस तरह सिद्धि प्राप्त करने वालों में से विरला ही कोई मुझे वास्तव में जान पाता है।

Out of many thousands among men, one may endeavor for perfection, and of those who have achieved perfection, hardly one knows Me in truth.

BG 7.4,

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।

अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि तथा अहंकार – ये आठ प्रकार से विभक्त मेरी भिन्ना (अपर) प्रकृतियाँ हैं।

Earth, water, fire, air, ether, mind, intelligence and false ego—altogether these eight comprise My separated material energies.

BG 7.5,

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।

जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥ ५ ॥

हे महाबाहु अर्जुन! इनके अतिरिक्त मेरी एक अन्य परा शक्ति है जो उन जीवों से युक्त है, जो इस भौतिक अपरा प्रकृति के साधनों का विदोहन कर रहे हैं।

Besides this inferior nature, O mighty-armed Arjuna, there is a superior energy of Mine, which are all living entities who are struggling with material nature and are sustaining the universe.

BG 7.7,

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय ।

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ ७ ॥

हे धनञ्जय! मुझसे श्रेष्ठ कोई सत्य नहीं है | जिस प्रकार मोती धागे में गुँथे रहते हैं, उसी प्रकार सब कुछ मुझ पर ही आश्रित है |

O conquerer of wealth [Arjuna], there is no Truth superior to Me. Everything rests upon Me, as pearls are strung on a thread.

BG 7.8,

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसुर्ययोः |

प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु || ८ ||

हे कुन्तीपुत्र! मैं जल का स्वाद हूँ, सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रकाश हूँ, वैदिक मन्त्रों में ओंकार हूँ, आकाश में ध्वनि हूँ तथा मनुष्य में सामर्थ्य हूँ |

O son of Kuntī [Arjuna], I am the taste of water, the light of the sun and the moon, the syllable om in the Vedic mantras; I am the sound in ether and ability in man.

BG 7.14,

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया |

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते || १४ ||

प्रकृति के तीन गुणों वाली इस मेरी दैवी शक्ति को पार कर पाना कठिन है | किन्तु जो मेरे शरणागत हो जाते हैं, वे सरलता से इसे पार कर जाते हैं |

This divine energy of Mine, consisting of the three modes of material nature, is difficult to overcome. But those who have surrendered unto Me can easily cross beyond it.

BG 7.15,

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः |

माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः || १५ ||

जो निपट मुख है, जो मनुष्यों में अधम हैं, जिनका ज्ञान माया द्वारा हर लिया गया है तथा जो असुरों की नास्तिक प्रकृति को धारण करने वाले हैं, ऐसे दुष्ट मेरी शरण ग्रहण नहीं करते |

Those miscreants who are grossly foolish, lowest among mankind, whose knowledge is stolen by illusion, and who partake of the atheistic nature of demons, do not surrender unto Me.

BG 7.16,

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन |

आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ || १६ ||

हे भरतश्रेष्ठ! चार प्रकार के पुण्यात्मा मेरी सेवा करते हैं – आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी तथा ज्ञानी |

O best among the Bhāratas [Arjuna], four kinds of pious men render devotional service unto Me—the distressed, the desirer of wealth, the inquisitive, and he who is searching for knowledge of the Absolute.

BG 7.19,

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते |
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥ १९ ॥

अनेक जन्म-जन्मान्तर के बाद जिसे सचमुच ज्ञान होता है, वह मुझको समस्त कारणों का कारण जानकर मेरी शरण में आता है | ऐसा महात्मा अत्यन्त दुर्लभ होता है |

After many births and deaths, he who is actually in knowledge surrenders unto Me, knowing Me to be the cause of all causes and all that is. Such a great soul is very rare.

BG 7.23,

अन्तवत्तुफलंतेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् |
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥ २३ ॥

अल्पबुद्धि वाले व्यक्ति देवताओं की पूजा करते हैं और उन्हें प्राप्त होने वाले फल सीमित तथा क्षणिक होते हैं | देवताओं की पूजा करने वाले देवलोक को जाते हैं, किन्तु मेरे भक्त अन्ततः मेरे परमधाम को प्राप्त होते हैं |

Men of small intelligence worship the demigods, and their fruits are limited and temporary. Those who worship the demigods go to the planets of the demigods, but My devotees ultimately reach My supreme planet.

BG 7.28,

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् |
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ २८ ॥

जिन मनुष्यों ने पूर्वजन्मों में तथा इस जन्म में पुण्यकर्म किये हैं और जिनके पापकर्मों का पूर्णतया उच्छेदन हो चुका होता है, वे मोह के द्वन्द्वों से मुक्त हो जाते हैं और वे संकल्पपूर्वक मेरी सेवा में तत्पर होते हैं |

Persons who have acted piously in previous lives and in this life, whose sinful actions are completely eradicated and who are freed from the duality of delusion, engage themselves in My service with determination.

BG 7.29,

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये |
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥ २९ ॥

जो जरा तथा मृत्यु से मुक्ति पाने के लिए यत्नशील रहते हैं, वे बुद्धिमान व्यक्ति मेरी भक्ति की शरण ग्रहण करते हैं। वे वास्तव में ब्रह्म हैं क्योंकि वे दिव्य कर्मों के विषय में पूरी तरह से जानते हैं।

Intelligent persons who are endeavoring for liberation from old age and death take refuge in Me in devotional service. They are actually Brahman because they entirely know everything about transcendental and fruitive activities.

अध्याय आठ

भगवत्प्राप्ति

CHAPTER EIGHT **Attaining the Supreme**

भक्तिपूर्वक भगवान् कृष्ण का आजीवन स्मरण करते रहने से और विशेषतया मृत्यु के समय ऐसा करने से मनुष्य परम धाम को प्राप्त कर सकता है।

By remembering Lord Krishna in devotion throughout one's life, and especially at the time of death, one can attain to His supreme abode, beyond the material world.

BG 8.5,

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।

यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥ ५ ॥

और जीवन के अन्त में जो केवल मेरा स्मरण करते हुए शरीर का त्याग करता है, वह तुरन्त मेरे स्वभाव को प्राप्त करता है। इसमें रंचमात्र भी सन्देह नहीं है।

And whoever, at the time of death, quits his body, remembering Me alone, at once attains My nature. Of this there is no doubt.

BG 8.6,

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।

तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥ ६ ॥

हे कुन्तीपुत्र! शरीर त्यागते समय मनुष्य जिस-जिस भाव का स्मरण करता है, वह उस उस भाव को निश्चित रूप से प्राप्त होता है।

Whatever state of being one remembers when he quits his body, that state he will attain without fail.

BG 8.15,

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।

नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ॥ १५ ॥

मुझे प्राप्त करके महापुरुष, जो भक्तियोगी हैं, कभी भी दुखों से पूर्ण इस अनित्य जगत् में नहीं लौटते, क्योंकि उन्हें परम सिद्धि प्राप्त हो चुकी होती है।

After attaining Me, the great souls, who are yogīs in devotion, never return to this temporary world, which is full of miseries, because they have attained the highest perfection.

BG 8.16,

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १६ ॥

इस जगत् में सर्वोच्च लोक से लेकर निम्नतम सारे लोक दुखों के घर हैं, जहाँ जन्म तथा मरण का चक्कर लगा रहता है। किन्तु हे कुन्तीपुत्र! जो मेरे धाम को प्राप्त कर लेता है, वह फिर कभी जन्म नहीं लेता।

From the highest planet in the material world down to the lowest, all are places of misery wherein repeated birth and death take place. But one who attains to My abode, O son of Kuntī, never takes birth again.

BG 8.17,

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद् ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥ १७ ॥

मानवीय गणना के अनुसार एक हजार युग मिलकर ब्रह्मा का दिन बनता है और इतनी ही बड़ी ब्रह्मा की रात्रि भी होती है।

By human calculation, a thousand ages taken together is the duration of Brahmā's one day. And such also is the duration of his night.

BG 8.19,

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥ १९ ॥

जब-जब ब्रह्मा का दिन आता है तो सारे जीव प्रकट होते हैं और ब्रह्मा की रात्रि होते ही वे असहायवत् विलीन हो जाते हैं।

Again and again the day comes, and this host of beings is active; and again the night falls, O Pārtha, and they are helplessly dissolved.

CHAPTER NINE **The Most Confidential Knowledge**

भगवान् श्रीकृष्ण परमेश्वर हैं और पूज्य हैं। भक्ति के माध्यम से जीव उनसे शाश्वत सम्बद्ध है। शुद्ध भक्ति को जागृत करके मनुष्य कृष्ण के धाम को वापस जाता है।

Lord Krishna is the Supreme Godhead and the supreme object of worship. The soul is eternally related to Him through transcendental devotional service (bhakti). By reviving one's pure devotion one returns to Krishna in the spiritual realm.

BG 9.2,

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ॥ २ ॥

यह ज्ञान सब विद्याओं का राजा है, जो समस्त रहस्यों में सर्वाधिक गोपनीय है। यह परम शुद्ध है और चूँकि यह आत्मा की प्रत्यक्ष अनुभूति कराने वाला है, अतः यह धर्म का सिद्धान्त है। यह अविनाशी है और अत्यन्त सुखपूर्वक सम्पन्न किया जाता है।

This knowledge is the king of education, the most secret of all secrets. It is the purest knowledge, and because it gives direct perception of the self by realization, it is the perfection of religion. It is everlasting, and it is joyfully performed.

BG 9.4,

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥

यब सब संसार मेरे अव्यक्त स्वरूप से व्याप्त है। सम्पूर्ण प्राणी मेरेमें स्थित हैं परन्तु मैं उनमें नहीं हूँ।

By Me, in My unmanifested form, this entire universe is pervaded. All beings are in Me, but I am not in them.

BG 9.10,

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥ १० ॥

हे कुन्तीपुत्र! यह भौतिक प्रकृति मेरी शक्तियों में से एक है और मेरी अध्यक्षता में कार्य करती है, जिससे सारे चर तथा अचर प्राणी उत्पन्न होते हैं। इसके शासन में यह जगत् बारम्बार सृजित और विनष्ट होता रहता है।

This material nature is working under My direction, O son of Kuntī, and it is producing all moving and unmoving beings. By its rule this manifestation is created and annihilated again and again.

BG 9.11,

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ ११ ॥

जब मैं मनुष्य रूप में अवतरित होता हूँ, तो मूर्ख मेरा उपहास करते हैं। वे मुझ परमेश्वर के दिव्य स्वभाव को नहीं जानते।

Fools deride Me when I descend in the human form. They do not know My transcendental nature and My supreme dominion over all that be.

BG 9.23,

येऽप्यन्यदेवताभक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ॥ २३ ॥

हे कुन्तीपुत्र! जो लोग अन्य देवताओं के भक्त हैं और उनकी श्रद्धापूर्वक पूजा करते हैं, वास्तव में वे भी मेरी पूजा करते हैं, किन्तु वे यह त्रुटिपूर्ण ढंग से करते हैं।

Whatever a man may sacrifice to other gods, O son of Kuntī, is really meant for Me alone, but it is offered without true understanding.

BG 9.25,

यान्ति देवव्रता देवान्पितृन्त्यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥ २५ ॥

जो देवताओं की पूजा करते हैं, वे देवताओं के बीच जन्म लेंगे, जो पितरों को पूजते हैं, वे पितरों के पास जाते हैं, जो भूत-प्रेतों की उपासना करते हैं, वे उन्हीं के बीच जन्म लेते हैं और जो मेरी पूजा करते हैं वे मेरे साथ निवास करते हैं।

Those who worship the demigods will take birth among the demigods; those who worship ghosts and spirits will take birth among such beings; those who worship ancestors go to the ancestors; and those who worship Me will live with Me.

BG 9.26,

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥ २६ ॥

यदि कोई प्रेम तथा भक्ति के साथ मुझे पत्र, पुष्प, फल या जल प्रदान करता है, तो मैं उसे स्वीकार करता हूँ।

If one offers Me with love and devotion a leaf, a flower, fruit or water, I will accept it.

BG 9.27,

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥ २७ ॥

हे कुन्तीपुत्र! तुम जो कुछ करते हो, जो कुछ खाते हो, जो कुछ अर्पित करते हो या दान देते हो और जो भी तपस्या करते हो, उसे मुझे अर्पित करते हुए करो ।

O son of Kuntī, all that you do, all that you eat, all that you offer and give away, as well as all austerities that you may perform, should be done as an offering unto Me.

BG 9.29,

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः ।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥ २९ ॥

मैं न तो किसी से द्वेष करता हूँ, न ही किसी के साथ पक्षपात करता हूँ । मैं सबों के लिए समभाव हूँ । किन्तु जो भी भक्तिपूर्वक मेरी सेवा करता है, वह मेरा मित्र है, मुझमें स्थित रहता है और मैं भी उसका मित्र हूँ ।

I envy no one, nor am I partial to anyone. I am equal to all. But whoever renders service unto Me in devotion is a friend, is in Me, and I am also a friend to him.

BG 9.32,

मांहिपार्थव्यपाश्रित्ययेऽपिस्युः पापयोनयः ।
स्त्रियोवैश्यास्तथा शुद्रास्तेऽपियान्तिपरांगतिम् ॥ ३२ ॥

हे पार्थ! जो लोग मेरी शरण ग्रहण करते हैं, वे भले ही निम्नजन्मा स्त्री, वैश्य (व्यापारी) तथा शुद्र (श्रमिक) क्यों न हों, वे परमधाम को प्राप्त करते हैं ।

O son of Pṛthā, those who take shelter in Me, though they be of lower birth—women, vaiśyas [merchants], as well as śūdras [workers]—can approach the supreme destination.

BG 9.34,

मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमानमस्कुरु ।
मामेवैष्यसियुक्त्वैवमात्मनंमत्परायणः ॥ ३४ ॥

अपने मन को मेरे नित्य चिन्तन में लगाओ, मेरे भक्त बनो, मुझे नमस्कार करो और मेरी ही पूजा करो । इस प्रकार मुझमें पूर्णतया तल्लीन होने पर तुम निश्चित रूप से मुझको प्राप्त होगे ।

Engage your mind always in thinking of Me, offer obeisances and worship Me. Being completely absorbed in Me, surely you will come to Me.

अध्याय दस

श्री भगवान् का ऐश्वर्य

CHAPTER TEN **The Opulence of the Absolute**

बल, सौन्दर्य, ऐश्वर्य या उत्कृष्टता प्रदर्शित करने वाली समस्त अद्भुत घटनाएँ, चाहे वे इस लोक में हों या आध्यात्मिक जगत में, कृष्ण की दैवी शक्तियों एवं ऐश्वर्यों की आशिक अभिव्यक्तियाँ हैं। समस्त कारणों के कारण-स्वरूप तथा सर्व स्वरूप कृष्ण समस्त जीवों के परम पूजनीय हैं।

All wondrous phenomena showing power, beauty, grandeur or sublimity, either in the material world or in the spiritual, are but partial manifestations of Krishna's divine energies and opulence. As the supreme cause of all causes and the support and essence of everything, Krishna is the supreme object of worship for all beings.

BG 10.8,

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।

इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥ ८ ॥

मैं समस्त आध्यात्मिक तथा भौतिक जगत् का कारण हूँ, प्रत्येक वस्तु मुझ ही से उद्भूत है। जो बुद्धिमान यह भलीभाँति जानते हैं, वे मेरी प्रेमाभक्ति में लगते हैं तथा हृदय से पूरी तरह मेरी पूजा में तत्पर होते हैं।

I am the source of all spiritual and material worlds. Everything emanates from Me. The wise who know this perfectly engage in My devotional service and worship Me with all their hearts.

BG 10.10,

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।

ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥ १० ॥

जो प्रेमपूर्वक मेरी सेवा करने में निरन्तर लगे रहते हैं, उन्हें मैं ज्ञान प्रदान करता हूँ, जिसके द्वारा वे मुझ तक आ सकते हैं।

To those who are constantly devoted and worship Me with love, I give the understanding by which they can come to Me.

BG 10.39,

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।

न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥ ३९ ॥

यही नहीं, हे अर्जुन! मैं समस्त सृष्टि का जनक बीज हूँ | ऐसा चर तथा अचर कोई भी प्राणी नहीं है, जो मेरे बिना रह सके |

Furthermore, O Arjuna, I am the generating seed of all existences. There is no being-moving or unmoving-that can exist without Me.

अध्याय ग्यारह

विराट रूप

CHAPTER ELEVEN The Universal Form

भगवान् कृष्ण अर्जुन को दिव्य दृष्टि प्रदान करते हैं और विश्व-रूप में अपना अद्भुत असीम रूप प्रकट करते हैं | इस प्रकार वे अपनी दिव्यता स्थापित करते हैं | कृष्ण बतलाते हैं कि उनका सर्व आकर्षक मानव-रूप ही ईश्वर का आदि रूप है | मनुष्य शुद्ध भक्ति के द्वारा ही इस रूप का दर्शन कर सकता है |

Lord Krishna grants Arjuna divine vision and reveals His spectacular unlimited form as the cosmic universe. Thus He conclusively establishes His divinity. Krishna explains that His own all-beautiful humanlike form is the original form of Godhead. One can perceive this form only by pure devotional service.

BG 11.10 &11,

अनेकवक्त्रनयनमनेकाअद्भुतदर्शनम् |
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् || १० ||
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् |
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् || ११ ||

अर्जुन ने इस विश्वरूप में असंख्य मुख, असंख्य नेत्र तथा असंख्य आश्चर्यमय दृश्य देखे | यह रूप अनेक दैवी आभूषणों से अलंकृत था और अनेक दैवी हथियार उठाये हुए था | यह दैवी मालाएँ तथा वस्त्र धारण किये थे और उस पर अनेक दिव्य सुगन्धियाँ लगी थीं | सब कुछ आश्चर्यमय, तेजमय, असीम तथा सर्वत्र व्याप्त था |

Arjuna saw in that universal form unlimited mouths and unlimited eyes. It was all wondrous. The form was decorated with divine, dazzling ornaments and arrayed in many garbs. He was garlanded gloriously, and there were many scents smeared over His body. All was magnificent, all-expanding, unlimited. This was seen by Arjuna.

BG 11.33,

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम् |
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भाव सव्यसाचिन् || ३३ ||

अतः उठो! लड़ने के लिए तैयार होओ और यश अर्जित करो | अपने शत्रुओं को जीतकर सम्पन्न राज्य का भोग करो | ये सब मेरे द्वारा पहले ही मारे जा चुके हैं और हे सव्यसाची! तुम तो युद्ध में केवल निमित्तमात्र हो सकते हो |

Therefore get up and prepare to fight. After conquering your enemies you will enjoy a flourishing kingdom. They are already put to death by My arrangement, and you, O Savyasācin, can be but an instrument in the fight.

BG 11.54,

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेव विधोऽर्जुन |

जातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप || ५४ ||

हे अर्जुन! केवल अनन्य भक्ति द्वारा मुझे उस रूप में समझा जा सकता है, जिस रूप में मैं तुम्हारे समक्ष खड़ा हूँ और इसी प्रकार मेरा साक्षात् दर्शन भी किया जा सकता है | केवल इसी विधि से तुम मेरे ज्ञान के रहस्य को पा सकते हो |

My dear Arjuna, only by undivided devotional service can I be understood as I am, standing before you, and can thus be seen directly. Only in this way can you enter into the mysteries of My understanding.

अध्याय बारह

भक्तियोग

CHAPTER TWELVE Devotional Service

कृष्ण के शुद्ध प्रेम को प्राप्त करने का सबसे सुगम एवं सर्वोच्च साधन भक्तियोग है | इस परम पथ का अनुसरण करने वालों में दिव्य गुण उत्पन्न होते हैं |

Bhakti-yoga, pure devotional service to Lord Krishna, is the highest and most expedient means for attaining pure love for Krishna, which is the highest end of spiritual existence. Those who follow this supreme path develop divine qualities

BG 12.2,

श्रीभगवानुवाच |

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते |

श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः || २ ||

श्रीभगवान् ने कहा - जो लोग अपने मन को मेरे साकार रूप में एकाग्र करते हैं, और अत्यन्त श्रद्धापूर्वक मेरी पूजा करने में सदैव लगे रहते हैं, वे मेरे द्वारा परम सिद्ध माने जाते हैं |

The Blessed Lord said: He whose mind is fixed on My personal form, always engaged in worshipping Me with great and transcendental faith, is considered by Me to be most perfect.

BG 12.20,

ये तु धर्मात्मतमिदं यथोक्तं पर्युपासते ।

श्रद्धधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥ २० ॥

जो इस भक्ति के अमर पथ का अनुसरण करते हैं, और जो मुझे ही अपने चरम लक्ष्य बना कर श्रद्धासहित पूर्णरूपेण संलग्न रहते हैं, वे भक्त मुझे अत्यधिक प्रिय हैं ।

He who follows this imperishable path of devotional service and who completely engages himself with faith, making Me the supreme goal, is very, very dear to Me.

अध्याय तेरह

प्रकृति, पुरुष तथा चेतना

CHAPTER THIRTEEN Nature, the Enjoyer, and Consciousness

जो व्यक्ति शरीर, आत्मा तथा इनसे भी परे परमात्मा के अन्तर को समझ लेता है, उसे इस भौतिक जगत से मोक्ष प्राप्त होता है ।

One who understands the difference between the body, the soul and the Supersoul beyond them both attains liberation from this material world.

BG 13.8 & 13.9,

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।

आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ८ ॥

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च ।

जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ९ ॥

विनम्रता, दम्भहीनता, अहिंसा, सहिष्णुता, सरलता, प्रामाणिक गुरु के पास जाना, पवित्रता, स्थिरता, आत्मसंयम, इन्द्रियतृप्ति के विषयों का परित्याग, अहंकार का अभाव, जन्म, मृत्यु, वृद्धावस्था तथा रोग के दोषों की अनुभूति, वैराग्य, सन्तान, स्त्री, घर तथा अन्य वस्तुओं की ममता से मुक्ति, अच्छी तथा बुरी घटनाओं के प्रति समभाव, मेरे प्रति निरन्तर अनन्य भक्ति, एकान्त स्थान में रहने की इच्छा, जन समूह से विलगाव, आत्म-साक्षात्कार की महत्ता को स्वीकारना, तथा परम सत्य की दार्शनिक खोज - इन सबको मैं ज्ञान घोषित करता हूँ और इनके अतिरिक्त जो भी है, वह सब अज्ञान है ।

Humility, pridelessness, nonviolence, tolerance, simplicity, approaching a bona fide spiritual master, cleanliness, steadiness and self-control; renunciation of the objects of sense gratification, absence of false ego, the perception of the evil of birth, death, old age and disease; nonattachment to children, wife, home and the rest, and evenmindedness amid pleasant and unpleasant events; constant and unalloyed devotion to Me, resorting to solitary places, detachment from the general mass of people; accepting the importance of self-realization, and philosophical search for the Absolute Truth—all these I thus declare to be knowledge, and what is contrary to these is ignorance.

BG 13.22,

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान् ।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥ २२ ॥

इस प्रकार जीव प्रकृति के तीनों गुणों का भोग करता हुआ प्रकृति में ही जीवन बिताता है । यह उस प्रकृति के साथ उसकी संगति के कारण है । इस तरह उसे उत्तम तथा अधम योनियाँ मिलती रहती हैं ।

The living entity in material nature thus follows the ways of life, enjoying the three modes of nature. This is due to his association with that material nature. Thus he meets with good and evil amongst various species.

BG 13.23,

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः ।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः ॥ २३ ॥

तो भी इस शरीर में एक दिव्य भोक्ता है, जो ईश्वर है, परम स्वामी है और साक्षी तथा अनुमति देने वाले के रूप में विद्यमान है और जो परमात्मा कहलाता है ।

Yet in this body there is another, a transcendental enjoyer who is the Lord, the supreme proprietor, who exists as the overseer and permitter, and who is known as the Supersoul.

अध्याय चौदह

प्रकृति के तीन गुण

CHAPTER FOURTEEN The Three Modes of Material Nature

सारे देहधारी जीव भौतिक प्रकृति के तीन गुणों के अधीन हैं- ये हैं सतो गुण, रजो गुण तथा तमो गुण । कृष्ण बतलाते हैं कि ये गुण क्या हैं? ये हम पर किस प्रकार क्रिया करते हैं? कोई इनको कैसे पार कर सकता है? और दिव्य पद को प्राप्त व्यक्ति के कौन-कौन से लक्षण हैं ?

All embodied souls are under the control of the three modes, or qualities, of material nature: goodness, passion, and ignorance. Lord Krishna explains what these modes are, how they act upon us, how one transcends them, and the symptoms of one who has attained the transcendental state.

BG 14.4,

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः ।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥

हे कुन्तीपुत्र! तुम यह समझ लो कि समस्त प्रकार की जीव-योनियाँ इस भौतिक प्रकृति में जन्म द्वारा सम्भव हैं और मैं उनका बीज-प्रदाता पिता हूँ ।

It should be understood that all species of life, O son of Kuntī, are made possible by birth in this material nature, and that I am the seed-giving father.

BG 14.5,

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः ।
निबद्धान्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥ ५ ॥

भौतिक प्रकृति तीन गुणों से युक्त है | ये हैं - सतो, रजो तथा तमोगुण | हे महाबाहु अर्जुन! जब शाश्वत जीव प्रकृति के संसर्ग में आता है, तो वह इन गुणों से बँध जाता है |

Material nature consists of the three modes—goodness, passion and ignorance. When the living entity comes in contact with nature, he becomes conditioned by these modes.

BG 14.15,

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते ।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥ १५ ॥

जब कोई रजोगुण में मरता है, तो वह सकाम कर्मियों के बीच जन्म ग्रहण करता है और जब कोई तमोगुण में मरता है, तो वह पशुयोनि में जन्म धारण करता है |

When one dies in the mode of passion, he takes birth among those engaged in fruitive activities; and when he dies in the mode of ignorance, he takes birth in the animal kingdom.

BG 14.26,

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ २६ ॥

जो समस्त परिस्थितियों में अविचलित भाव से पूर्ण भक्ति में प्रवृत्त होता है, वह तुरन्त ही प्रकृति के गुणों को लाँघ जाता है और इस प्रकार ब्रह्म के स्तर तक पहुँच जाता है |

One who engages in full devotional service, who does not fall down in any circumstance, at once transcends the modes of material nature and thus comes to the level of Brahman.

अध्याय पन्द्रह

पुरुषोत्तम योग

CHAPTER FIFTEEN **The Yoga of the Supreme Person**

वैदिक ज्ञान का चरम लक्ष्य अपने आपको भौतिक जगत् के पाश से विलग करना तथा कृष्ण को भगवान् मानना है। जो कृष्ण के परम स्वरूप को समझ लेता है, वह उनकी शरण ग्रहण करके उनकी भक्ति में लग जाता है।

The ultimate purpose of Vedic knowledge is to detach one self from the entanglement of the material world and to understand Lord Krishna as the Supreme Personality of Godhead. One who understands Krishna 's supreme identity surrenders unto Him and engages in His devotional service.

BG 15.6,

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ ६ ॥

वह मेरा परम धाम न तो सूर्य या चन्द्र के द्वारा प्रकाशित होता है और न अग्नि या बिजली से। जो लोग वहाँ पहुँच जाते हैं, वे इस भौतिक जगत् में फिर से लौट कर नहीं आते।

That abode of Mine is not illumined by the sun or moon, nor by electricity. One who reaches it never returns to this material world.

BG 15.7,

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥

इस बद्ध जगत् में सारे जीव मेरे शाश्वत अंश हैं। बद्ध जीवन के कारण वे छहों इन्द्रियों के घोर संघर्ष कर रहे हैं, जिसमें मन भी सम्मिलित है।

The living entities in this conditioned world are My eternal, fragmental parts. Due to conditioned life, they are struggling very hard with the six senses, which include the mind.

BG 15.15,

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ १५ ॥

मैं प्रत्येक जीव के हृदय में आसीन हूँ और मुझ से ही स्मृति, ज्ञान तथा विस्मृति होती है। मैं ही वेदों के द्वारा जानने योग्य हूँ। निस्सन्देह मैं वेदान्त का संकलनकर्ता तथा समस्त वेदों का जानने वाला हूँ।

I am seated in everyone's heart, and from Me come remembrance, knowledge and forgetfulness. By all the Vedas am I to be known; indeed I am the compiler of Vedānta, and I am the knower of the Vedas.

अध्याय सोलह

दैवी तथा आसुरी स्वभाव

CHAPTER SIXTEEN - The Divine and Demoniatic Natures

शास्त्रों के नियमों का पालन न करके मनमाने ढंग से जीवन व्यतीत करने वाले तथा आसुरी गुणों वाले व्यक्ति अधम योनियों को प्राप्त होते हैं और आगे भी भव बन्धन में पड़े रहते हैं। किन्तु दैवी गुणों से सम्पन्न तथा शास्त्रों को आधार मानकर नियमित जीवन बिताने वाले लोग आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त करते हैं।

Those who possess demoniac qualities and who live whimsically, without following the regulations of scripture, attain lower births and further material bondage. But those who possess divine qualities and regulated lives, abiding by scriptural authority, gradually attain spiritual perfection.

BG 16.1,

श्रीभगवानुवाच ।

अभयं सत्त्वसंश्रुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।

दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥ १ ॥

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ २ ॥

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता ।

भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥ ३ ॥

भगवान् ने कहा - हे भरतपुत्र! निर्भयता, आत्मशुद्धि, आध्यात्मिक ज्ञान का अनुशीलन, दान, आत्म-संयम, यज्ञपरायणता, वेदाध्ययन, तपस्या, सरलता, अहिंसा, सत्यता, क्रोधविहीनता, त्याग, शान्ति, छिद्रान्वेषण में अरुचि, समस्त जीवों पर करुण, लोभविहीनता, भद्रता, लज्जा, संकल्प, तेज, क्षमा, धैर्य, पवित्रता, ईर्ष्या तथा सम्मान की अभिलाषा से मुक्ति - ये सारे दिव्य गुण हैं, जो दैवी प्रकृति से सम्पन्न देवतुल्य पुरुषों में पाये जाते हैं।

The Blessed Lord said: Fearlessness, purification of one's existence, cultivation of spiritual knowledge, charity, self-control, performance of sacrifice, study of the Vedas, austerity and simplicity; nonviolence, truthfulness, freedom from anger; renunciation, tranquility, aversion to faultfinding, compassion and freedom from covetousness; gentleness, modesty and steady determination; vigor, forgiveness, fortitude, cleanliness, freedom from envy and the passion for honor—these

transcendental qualities, O son of Bharata, belong to godly men endowed with divine nature.

BG 16.13,14 and 15,

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥ १३ ॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ।
इश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥ १४ ॥
आद्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया ।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानमोहिताः ॥ १५ ॥

आसुरी व्यक्ति सोचता है, आज मेरे पास इतना धन है और अपनी योजनाओं से मैं और अधिक धन कमाऊँगा । इस समय मेरे पास इतना है किन्तु भविष्य में यह बढ़कर और अधिक हो जायेगा । वह मेरा शत्रु है और मैंने उसे मार दिया है और मेरे अन्य शत्रु भी मार दिये जाएंगे । मैं सभी वस्तुओं का स्वामी हूँ । मैं भोक्ता हूँ । मैं सिद्ध, शक्तिमान् तथा सुखी हूँ । मैं सबसे धनी व्यक्ति हूँ और मेरे आसपास मेरे कुलीन सम्बन्धी हैं । कोई अन्य मेरे समान शक्तिमान तथा सुखी नहीं है । मैं यज्ञ करूँगा, दान दूँगा और इस तरह आनन्द मनाऊँगा । इस प्रकार ऐसे व्यक्ति अज्ञानवश मोहग्रस्त होते रहते हैं ।

The demoniac person thinks: "So much wealth do I have today, and I will gain more according to my schemes. So much is mine now, and it will increase in the future, more and more. He is my enemy, and I have killed him; and my other enemy will also be killed. I am the lord of everything, I am the enjoyer, I am perfect, powerful and happy. I am the richest man, surrounded by aristocratic relatives. There is none so powerful and happy as I am. I shall perform sacrifices, I shall give some charity, and thus I shall rejoice." In this way, such persons are deluded by ignorance.

BG 16.21,

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभास्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ २१ ॥

इस नरक के तीन द्वार हैं - काम, क्रोध और लोभ । प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि इन्हें त्याग दे, क्योंकि इनसे आत्मा का पतन होता है ।

There are three gates leading to this hell—lust, anger, and greed. Every sane man should give these up, for they lead to the degradation of the soul.

BG 16.23,

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥ २३ ॥

जो शास्त्रों के आदेशों की अवहेलना करता है और मनमाने ढंग से कार्य करता है, उसे न तो सिद्धि, न सुख, न ही परमगति की प्राप्ति हो पाती है।

But he who discards scriptural injunctions and acts according to his own whims attains neither perfection, nor happiness, nor the supreme destination.

अध्याय सत्रह

श्रद्धा के विभाग

CHAPTER SEVENTEEN **The Divisions of Faith**

भौतिक प्रकृति के तीन गुणों से तीन प्रकार की श्रद्धा उत्पन्न होती है। रजोगुण तथा तमो गुण में श्रद्धा पूर्वक किये गये कर्मों से अस्थायी फल प्राप्त होते हैं, जबकि शास्त्र-सम्मत विधि से सतोगुण में रहकर सम्पन्न कर्म हृदय को शुद्ध करते हैं। ये भगवान् कृष्ण के प्रति शुद्ध श्रद्धा तथा भक्ति उत्पन्न करने वाले होते हैं।

There are three types of faith, corresponding to and evolving from the three modes of material nature. Acts performed by those whose faith is in passion and ignorance yield only impermanent, material results, whereas acts performed in goodness, in accord with scriptural injunctions, purify the heart and lead to pure faith in Lord Krishna and devotion to Him.

BG 17.8, 9 &10,

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।

रस्या स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥ ८ ॥

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरुक्षविदाहिनः ।

आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।

उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥ १० ॥

जो भोजन सात्त्विक व्यक्तियों को प्रिय होता है, वह आयु बढ़ाने वाला, जीवन को शुद्ध करने वाला तथा बल, स्वास्थ्य, सुख तथा तृप्ति प्रदान करने वाला होता है। ऐसा भोजन रसमय, स्निग्ध, स्वास्थ्यप्रद तथा हृदय को भाने वाला होता है।

अत्यधिक तिक्त, खट्टे, नमकीन, गरम, चटपटे, शुष्क तथा जलन उत्पन्न करने वाले भोजन रजोगुणी व्यक्तियों को प्रिय होते हैं। ऐसे भोजन दुख, शोक तथा रोग उत्पन्न करने वाले हैं।

खाने से तीन घंटे पूर्व पकाया गया, स्वादहीन, वियोजित एवं सड़ा, जूठा तथा अस्पृश्य वस्तुओं से युक्त भोजन उन लोगों को प्रिय होता है, जो तामसी होते हैं।

Foods in the mode of goodness increase the duration of life, purify one's existence and give strength, health, happiness and satisfaction. Such nourishing foods are sweet, juicy, fattening and palatable. Foods that are too bitter, too sour, salty, pungent, dry and hot, are liked by people in the modes of passion. Such foods cause pain, distress, and disease. Food cooked more than three hours before being eaten, which

is tasteless, stale, putrid, decomposed and unclean, is food liked by people in the mode of ignorance.

BG 17.14,

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥ १४ ॥

परमेश्वर, ब्राह्मणों, गुरु, माता-पिता जैसे गुरुजनों की पूजा करना तथा पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा ही शारीरिक तपस्या है ।

The austerity of the body consists in this: worship of the Supreme Lord, the brāhmaṇas, the spiritual master, and superiors like the father and mother. Cleanliness, simplicity, celibacy and nonviolence are also austerities of the body.

अध्याय अठारह

उपसंहार-संन्यास की सिद्धि

CHAPTER EIGHTEEN Conclusion— The Perfection of Renunciation

कृष्ण वैराग्य का अर्थ तथा मानवीय चेतना तथा कर्म पर प्रकृति के गुणों का प्रभाव समझाते हैं । वे ब्रह्म-अनुभूति, भगवद्गीता की महिमा तथा भगवद्गीता के चरम निष्कर्ष को समझाते हैं । यह चरम निष्कर्ष यह है कि धर्म का सर्वोच्च मार्ग भगवान् कृष्ण की परम शरणागति है जो पूर्ण प्रकाश प्रदान करने वाली है और मनुष्य को कृष्ण के नित्य धाम वापस जाने में समर्थ बनाती है ।

Krishna explains the meaning of renunciation and the effects of the modes of nature on human consciousness and activity. He explains Brahman realization, the glories of the Bhagavad-gita, and the ultimate conclusion of the Gita: the highest path of religion is absolute, unconditional loving surrender unto Lord Krishna, which frees one from all sins, brings one to complete enlightenment, and enables one to return to Krishna's eternal spiritual abode.

BG 18.40,

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः ।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः ॥ ४० ॥

इस लोक में, स्वर्ग लोकों में या देवताओं के मध्य में कोई भी ऐसाव्यक्ति विद्यमान नहीं है, जो प्रकृति के तीन गुणों से मुक्त हो ।

There is no being existing, either here or among the demigods in the higher planetary systems, which is freed from the three modes of material nature.

BG 18.51, 52 & 53

बुद्ध्या विशुद्ध्या युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ।
शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥ ५१ ॥
विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥ ५२ ॥
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ ५३ ॥

अपनी बुद्धि से शुद्ध होकर तथा धैर्यपूर्वक मन को वश में करते हुए, इन्द्रियतृप्ति के विषयों का त्याग कर, राग तथा द्वेष से मुक्त होकर जो व्यक्ति एकान्त स्थान में वास करता है, जो थोड़ा खाता है, जो अपने शरीर मन तथा वाणी को वश में रखता है, जो सदैव समाधि में रहता है और पूर्णतया विरक्त, मिथ्या अहंकार, मिथ्या शक्ति, मिथ्या गर्व, काम, क्रोध तथा भौतिक वस्तुओं के संग्रह से मुक्त है, जो मिथ्या स्वामित्व की भावना से रहित तथा शान्त है वह निश्चय ही आत्म-साक्षात्कार के पद को प्राप्त होता है ।

Being purified by his intelligence and controlling the mind with determination, giving up the objects of sense gratification, being freed from attachment and hatred, one who lives in a secluded place, who eats little and who controls the body and the tongue, and is always in trance and is detached, who is without false ego, false strength, false pride, lust, anger, and who does not accept material things, such a

BG 18.54,

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ५४ ॥

इस प्रकार जो दिव्य पद पर स्थित है, वह तुरन्त परब्रह्म का अनुभव करता है और पूर्णतया प्रसन्न हो जाता है । वह न तो कभी शोक करता है, न किसी वस्तु की कामना करता है । वह प्रत्येक जीव पर समभाव रखता है । उस अवस्था में वह मेरी शुद्ध भक्ति को प्राप्त करता है ।

One who is thus transcendently situated at once realizes the Supreme Brahman. He never laments nor desires to have anything; he is equally disposed to every living entity. In that state he attains pure devotional service unto Me.

BG 18.55,

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः ।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥ ५५ ॥

केवल भक्ति से मुझ भगवान् को यथारूप में जाना जा सकता है । जब मनुष्य ऐसी भक्ति से मेरे पूर्ण भावनामृत में होता है, तो वह वैकुण्ठ जगत् में प्रवेश कर सकता है ।

One can understand the Supreme Personality as He is only by devotional service. And when one is in full consciousness of the Supreme Lord by such devotion, he can enter into the kingdom of God.

BG 18.61,

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥ ६१ ॥

हे अर्जुन! परमेश्वर प्रत्येक जीव के हृदय में स्थित हैं और भौतिक शक्ति से निर्मित यन्त्र में सवार की भाँति बैठे समस्त जीवों को अपनी माया से घुमा (भरमा) रहे हैं।

The Supreme Lord is situated in everyone's heart, O Arjuna, and is directing the wanderings of all living entities, who are seated as on a machine, made of the material energy.

BG 18.65,

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥ ६५ ॥

सदैव मेरा चिन्तन करो, मेरे भक्त बनो, मेरी पूजा करो और मुझे नमस्कार करो। इस प्रकार तुम निश्चित रूप से मेरे पास आओगे। मैं तुम्हें वचन देता हूँ, क्योंकि तुम मेरे परम प्रियमित्र हो।

Always think of Me and become My devotee. Worship Me and offer your homage unto Me. Thus you will come to Me without fail. I promise you this because you are My very dear friend.

BG 18.66,

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज ।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा श्रुचः ॥ ६६ ॥

समस्त प्रकार के धर्मों का परित्याग करो और मेरी शरण में आओ। मैं समस्त पापों से तुम्हारा उद्धार कर दूँगा। डरो मत।

Abandon all varieties of religion and just surrender unto Me. I shall deliver you from all sinful reaction. Do not fear.

BG 18.68,

य इदं परमं गुह्यं मद्भक्तैष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥ ६८ ॥

जो व्यक्ति भक्तों को यह परम रहस्य बताता है, वह शुद्ध भक्ति को प्राप्त करेगा और अन्त में वह मेरे पास वापस आएगा।

For one who explains the supreme secret to the devotees, devotional service is guaranteed, and at the end he will come back to Me.

BG 18.69,

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥

इस संसार में उसकी अपेक्षा कोई अन्य सेवक न तो मुझे अधिक प्रिय है और न कभी होगा ।

There is no servant in this world more dear to Me than he, nor will there ever be one more dear.

BG 18.71,

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः श्रुभॉल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥

और जो श्रद्धा समेत और द्वेषरहित होकर इसे सुनता है, वह सारे पापों से मुक्त हो जाता है और उन शुभ लोकों को प्राप्त होता है, जहाँ पुण्यात्माएँ निवास करती हैं ।

And one who listens with faith and without envy becomes free from sinful reaction and attains to the planets where the pious dwell.

BG 18.78,

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवो नीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥

जहाँ योगेश्वर कृष्ण है और जहाँ परम धनुर्धर अर्जुन हैं, वहीं ऐश्वर्य, विजय, अलौकिक शक्ति तथा नीति भी निश्चित रूप से रहती है । ऐसा मेरा मत है ।

Wherever there is Kṛṣṇa, the master of all mystics, and wherever there is Arjuna, the supreme archer, there will also certainly be opulence, victory, extraordinary power, and morality. That is my opinion.

